ओमशान्ति। अभी योग और ज्ञान दो चीज़ है। बाप के पास यह बहुत भारी ख़ज़ाना है। खुद ही बच्चों को देते हैं। बाप को जो बहुत याद करते हैं उनको करैन्ट जास्ती मिलती है; क्योंकि याद से ही याद मिलती है। यह कायदा है। मुख्य है याद। ऐसे नहीं ज्ञान बहुत है तो उसका मतलब बाप को याद करते हैं। नहीं। ज्ञान अलग डिपार्टमेन्ट है, योग अलग डिपार्टमेन्ट है। योग की बहुत बड़ी सबजेक्ट है। ज्ञान की इनसे छोटी सबजेक्ट है। योग से आत्मा सतोप्रधान बन जाती है; क्योंकि बहुत याद करती है ना। याद के बिगर सतोप्रधान बनना असम्भव है। बच्चे ही सारे दिन में बाप को याद नहीं करते तो बाप भी याद कैसे करेंगे? बच्चे अच्छी रीत याद करते हैं तो बाप की भी याद याद से मिलती है। बाप को खैंचते हैं याद करने लिए ऑटोमेटिकली। यह भी बना बनाया खेल है। जिसको अच्छी रीत समझना है। याद के लिए बहुत एकान्त भी चाहिए। बाबा समझाते हैं पिछाड़ी में जो आते हैं, और ऊँच पद मिलना ही है, तो उनकी याद बहुत रहती है। तो याद से फिर याद मिलती है। जब बच्चे बहुत याद करते हैं तो बाप भी बहुत याद करते हैं। वह कशिश करते हैं। कहते हैं ना बाबा रहम करो। कृपा करो। इसमें चाहिए याद। अच्छी रीत याद करने से ऑटोमेटिकली वह कशिश होगी। करैन्ट मिलेगी। आत्मा को अन्दर में आता है हम आत्मा बाबा को याद करता हूँ। तो वह याद एकदम अडोलती है। ज्ञान है धन की बात। याद से फिर याद मिलती है। जिससे हेल्दी बन जाते हैं। पवित्र बन जाते हैं। इतनी ताकत है जो सारे विश्व का(को)पवित्र बना देती है। इसलिए बुलाते हैं कि बाबा आकर पतितों को पावन बनाओ। अज्ञानी मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। ऐसे ही रड़ियां मारते रहते और टाइम वेस्ट करते हैं। बाप को जानते ही नहीं। नवधा भक्ति भी भल करते हैं, शिव के मंदिर में जाकर काशी करवट खाते हैं, मिलता तो कुछ नहीं है। फिर भी विकर्म बनना शुरू हो जाता हे। माया झट फंसाये देती है। प्राप्ति कुछ भी होती नहीं। अभी तुम बच्चे जानते हो पतित–पावन बाप ही है। ———————————— यह कुर्बानी है याद की। ....तो पहचानते ही नहीं हैं। शिव के मंदिर में भी शिव–शिव क(ह)ते जाये कूदते हैं। वह कोई आत्मा, परमात्मा की याद में नहीं हैं। वह तो समझते हैं शिव–शंकर है। तो यह अज्ञान हुआ ना। अज्ञान से धन नहीं मिलता। न बाप है जो ज्ञान की सृष्टि रचे। सृष्टि रची ही जाती है पवित्रता का(की) और ज्ञान का(की)। यहाँ तो बाप बार–बार कहते हैं बच्चे मन्मनाभव। मुझे याद करो तो पवित्र बन जावेंगे। तुम काम पर जीत पहनते हो। इसमें तुम जितना कोशिश करेंगे माया विघ्न भी इसमें ही डालती है। वह समझती है कि यह बाप को कर मेरे को छोड़ देंगे। तुमने भक्ति छोड़ दी है ना; क्योंकि तुम बाप के बन गये हो। तो सब कुछ भूल जाना पड़े। न धन, न मित्र–सम्बन्धी, न शरीर की याद आये। एक कथा भी है जिसमें कहा लाठी भी न उठाओ। अभी वह कोई यह नहीं कहते कि सब कुछ छोड़ना है। शरीर को भी याद न करो। वह तो सिर्फ चीज़ के लिए कहते हैं। बाप तो कहते हैं शरीर ही पुराना है। भक्ति–मार्ग की बातें सब छोड़ दो। एकदम सब कुछ भूल जाओ। सब छोड़ दो। काम में लगा दियो तब याद टूटे। इसमें बहुत मेहनत चाहिए। यह ऊँच पद पाने। शरीर भी याद न रहे। हम नंगे आये थे, नंगे जाना है। यह बाप तो बच्चों को बैठ पढ़ाते हैं। इनकी कोई तमन्ना नहीं रहती। यह तो सर्विस करते हैं कि पढ़े। बाप आये ही हैं पढ़ाने। बाप में ही तो ज्ञान है ना। तो यह बाप और बच्चे का खेल है इकट्ठा। बच्चे को भी याद करना है। फिर बाबा भी बैठ सर्च–लाइट देते हैं। कोई बहुत बैठ खैंचते हैं तो बाप बैठ लाइट देते हैं। बहुत नहीं खैंचते हैं तो यह बाबा भी बैठ बाप को याद करते हैं। कोई समय किसको कैरेन्ट देनी होती है बाप होकर। फिर नींद भी फिट जावेंगी। वही फुर्णा लग जाता फलाने का(को)करेन्ट देनी है। पढ़ाई से आयु नहीं बढ़ती। करेन्ट से आयु बढ़ती है। एवर हेल्दी बनते हैं। दुनिया में कोई की 125–150 की भी आयु होती है। जरूर हेल्दी होगा ना। भक्ति भी बहुत करते हैं। भक्ति में भी फायदा है, नुकसान नहीं। जो भक्ति भी नहीं करते तो इतने मैनर्स आदि अच्छे नहीं होते हैं। भक्तों में विश्वास रहता है। वह तो धंधे में

कब झूठ, पाप ठगी आद नहीं करते। भक्ति का भी प्रभाव रहता है। कहेंगे यह तो भक्त आदमी है। यह जास्ती लेने वाला नहीं है। –– वह कब मारेंगे नहीं, क्रोध नहीं आवेगा। भक्तों की भी महिमा है। मनुष्यों को थोड़े ही पता है भक्ति कब से शुरु होती है। क्या होता है। ज्ञान का तो पता ही नहीं पड़ता। भक्ति पावरफुल हो जाती है। फिर ज्ञान का जब प्रभाव हो जाता है तो फिर भक्ति की बिल्कुल याद नहीं रहती। एक/दो में जैसे यह दुश्मन है। दुःख और सुख, ज्ञान और भक्ति का भी खेल बना हुआ है। मनुष्य तो जानते ही नहीं। वह तो समझते हैं सुख–दुःख भगवान ही देते हैं। और फिर उनको सर्वव्यापी भी कह देते हैं। सुख–दुःख तो अलग चीज़ है। ड्रामा को न जानने कारण कुछ भी समझते नहीं। इतने सब आत्माएँ हैं एक शरीर छोड़ फिर दूसरा लेती हैं। यह तुम अभी ही समझते हो। आत्मा ही मुख्य है। मैं आत्मा शरीर लेकर पार्ट बजाती हूँ। यह भूल जाते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे कि सतयुग में तुम देही–अभिमानी रहते हो। नहीं। यह तो अभी ही बाप सिखलाते हैं कि ऐसे देही–अभिमानी बनो। मैं आत्मा हूँ। परमात्मा बाप को याद करना है। पिवत्र(पवित्र) बनना है। वहाँ तो है ही पवित्र। सुखधाम। सुख में कोई याद नहीं करते। याद कर क्या करेंगे? भगवान को याद करते ही है दुःख में। सुख मिल गया फिर याद क्या करेंगे? तो देखो ड्रामा कैसा विचित्र है। जिसको तुम भी नम्बरवार ही जानते हो। यह समझने की बातें हैं। यह तुम प्वाइंट्स आदि लिखते भी हो भाषण आदि करने समय रिवाइज़ करने लिए। डाक्टर, बैरिस्टर लोग भी प्वाइंट दवाइयां आद नोट करते हैं। नोट किया ही जाता है रिवाइज़ कर फिर औरों को सुनाने लिए। नोट कराते हैं बाप। मत तो बाप की मिलती है ना। लिखते हो तो फिर रिवाइज़ भी करना चाहिए। भाषण करने समय पढ़ना चाहिए। इनमें तो है बाबा की प्रवेशता। अकेला बाबा का पहला सन्तान हूँ ना। इनको अर्जुन, रथ कहते हैं ना। यह रथ तो है ना। बाप तुमको समझावेंगे ,यह भी सुनेंगे। वह प्वाइंट नहीं सुनाते तो मुझे क्या पता जो तुमको समझावें। धारणा करते हैं तो बोलते हैं। बाप कहते भी हैं यह बहुत जन्मों के अंत में है। पहले यह था। ब्रह्मा और विष्णु का चित्र भी है। पहले है यह। जरूर बच्चे भी होंगे। तुम बच्चे हो ना। तुम भी राजाई में चलते हो जरूर नम्बरवार। जितना याद करते, धारणा करते हैं ऐसा पद पाते हैं। ऐसे भी नहीं नाम–मात्र सिर्फ लिखना है। फायदा कुछ नहीं। दूसरे के भी नाम नहीं आते हैं; क्योंकि मुरली तो रोज़ चलती ही रहती है। बाप कहते हैं दिन प्रतिदिन गुह्य बातें सुनाता हूँ। यह प्वाइंट लिखना सिर्फ भाषण के टाइम काम आती है। सो भी लेटेस्ट नई2 प्वाइंट्स ही देखेंगे। पहले की पुरानी प्वाइंट थोड़े ही काम में आवेंगे। वह तो खत्म हुई फिर नई2 प्वाइंट सुनकर धारण कर सुनाना चाहिए। न धारण करते हैं, न सुनाते हैं ऐसे ही पड़े रहेंगे। भाषण के बाद ऐसे बहुत प्वाइंट याद आती है। यह प्वाइंट भूल गये जो समझानी थी। यह प्वाइंट सुनाते थे तो शायद बुद्धि में बैठ जाता। तुम हो ज्ञान के स्पीकर्स नम्बरवार। यह तो तुम कहेंगे पहले नम्बर में सबसे अच्छी मम्मा थी। बाबा की तो बात ही अलग है। यह तो बापदादा दोनों इकट्ठे हैं ना। मम्मा बहुत अच्छी समझाती थी। बच्चे सा0 भी करते हैं सम्पूर्ण मम्मा का। इनमें भी बाबा प्रवेश कर समझा सकते हैं। बाबा भी प्रवेश करते हैं। कहाँ बहुत जरूरी होगा तो बाबा भी आवेंगे। मम्मा भी आती होगी। यह सब समझने की बातें हैं। पढ़ाई फुर्सत के समय ही होती है। शरीर निर्वाह लिए तो सारा दिन धंधा–धोरी आद करते हैं। यह विचार, सागर, मंथन करने लिए फुर्सत, शान्ति चाहिए। तुम्हारा भी कोई2 बहुत अच्छी सर्विस करने वाले हैं। तो उनको भी मदद करनी है। उनकी आत्मा को याद करना पड़ता है। शरीर को याद कर फिर आत्मा को याद करना पड़ता है। तुमको भी यह युक्ति रचनी है। कोई अच्छा सर्विसएबुल बच्चा है, कुछ नुकसान होती है तो उनको मदद करनी चाहिए। बाप को याद करना होता है फिर खुद को भी अपने को आत्मा समझ कुछ न कुछ उनकी आत्मा को याद करना पड़ता है। वह जैसे सर्चलाइट देंगे। ऐसे भी नहीं जो एक जगह बैठना होता है। लेटे भी याद कर सकते हैं। चलते–फिरते, खाते–पीते याद में

रहना है। भोजन खाने समय भी बाप को याद करो। दूसरे को करेन्ट देनी है तो फिर रात को , सवेरे को याद में रहना होता है। बच्चों को समझाया गया है सवेरे उठकर बाप को याद करो। जितना जो याद करेंगे उतना ही बाप को कशिश होगी। बाप भी लाइट देंगे। बाबा का तो यही धंधा है। इनको याद भी करना होता है। सर्च–लाइट भी देनी होती है। जब बहुत सर्च–लाइट देनी होती है तो यह बाप को याद नहीं करते। सर्विस है ना। सर्विस में दिल लगती है। सर्चलाइट देनी होती है। याद करते हैं तो बाप भी सर्चलाइट देते हैं। आत्मा को देखना माना सर्चलाइट देना। बैटरी को मदद मिलती है। उनको भी तो सर्चलाइट देनी है ना। वह भी समझते हैं इनको लाइट मिलती है। फिर इनको कृपा–आर्शीवाद जो कहो; परन्तु खुद याद करते हैं तो सर्च–लाइट जरूर मिलेगी। सर्विसेबुल बीमार होगा तो तरस पड़ेगा। उनको सर्च–लाइट देवें। रात जाग कर भी आत्मा को याद करेंगे; क्योंकि उनको पावर की दरकार रहती है। तो रात को जागना भी होता है। याद करते हैं तो रिर्टन सर्विस भी चाहिए। जो याद करते हैं तो उनको याद पहुँचती है। बाप को भी दिल होगी हम भी याद करेंगे, उनको सर्चलाइट मिलेगी। बाप भी सर्चलाइट देते हैं। बाप और बच्चे का लव सबसे जास्ती है। यह बड़ी सूक्ष्म बातें हैं। बाकी समझानी तो बिल्कुल ही सहज है। उनमें विघ्न नहीं पड़ेंगे। मुख्य है याद की बात। उसमें ही विघ्न पड़ती है। याद से ही जैसे वह सोने का ख़ज़ाना बन जाता है। जिसमें धारणा होती है। कहते हैं ना शेर का दूध सोने के बर्तन में ठहरता है। इस बाप के ज्ञान धन के लिए भी सोने के बर्तन चाहिए। वह तो जब होंगे जब याद की यात्रा में रहेंगे। फिर मुरली भी अच्छी चलेगी। जो याद नहीं करते तो ज्ञान की धारणा भी नहीं होती। काम के नहीं रहते। ऐसे मत समझो बाप तो अन्तर्यामी है। बाबा ने तो पहले से ही ऐसे बोला था। यह सब गपोड़े हैं। बोला और हुआ यह। यह भक्तिमार्ग में होता है। यह बड़ी समझ की बात है। भक्तिमार्ग में वह बातें चलती हैं। कोई ने कहा बच्चा होगा या बच्ची? बोला, बच्चा होगा अच्छा बच्चा हो गया। (बस) समझेंगे यह तो अन्तर्यामी है। जैसे अक्षर भूरा का खेल भी होता है ना। सन्यासी भी ऐसे ही कह देते हैं। अच्छा बच्चा न हुआ तो कहेंगे भावी। वह समझते हैं ईश्वर की भावी। तुम कहेंगे ड्रामा की भावी। रात–दिन का फर्क है ना। ड्रामा का राज तो बाप ने अच्छी रीत समझाया है। पहले तुम भी नहीं जानते थे। यह तो तुम्हारा है (मरजीवा) जन्म। अभी तुम जानते हो हम यह देवता बन रहे हैं। यह इतना ऊँच कैसे बने इस टॉपिक पर भी तुम समझा सकते हो। आज हम बतावेंगे कि ल0ना0 को यह विश्व का मालिकपना कैसे मिला? फर्स्ट क्लास टॉपिक है। झट कई मनुष्य आ जावेंगे। यह वन्डरफुल बात है ना। ल0ना0 को यह राज्य कैसे मिला, कैसे गंवाया, हम सारी हिस्ट्री जाग्राफी बतावें। ऐसे तो कोई की भी बुद्धि में नहीं आवेगा। यह भी कहते हैं हम ल0ना0 को पूजा करते थे। गीता पढ़ते थे। बाबा ने प्रवेश किया तो सब छोड़ दिया। सा0 हुआ। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। इसमें कुछ भी गीता आद पढ़ने की बात ही नहीं। गीता में तो हैं झूठी बातें। बाप बैठा था तो भक्ति को छुड़ा दिया। गीता को फेंक दिया। कब शिव का दर्शन करने भी नहीं जाते थे। भक्तिमार्ग की बातें ही एकदम उड़ गई। बाप के आने से भक्ति खत्म हो जाती है। यह है नालेज रचता और रचना के आदि–मध्य–अन्त का। बाप रचता को जानने से तुम सब कुछ जान जाते हो। तुम तो टॉपिक ऐसे2 वन्डरफुल रखो जो मनुष्य सुन कर खुश हो जाये। सभी भागेंगे सुनने लिए। इन्होंने विश्व का राज्य कैसे लिया यह तो कोई भी बता न सके। मंदिर आद में तुम कोई से भी पूछो। यह तो सारे विश्व के मालिक थे। और कोई धर्म ही न था। भारत ही था। फिर तुम सतयुग को लाखों वर्ष कैसे कह देते हो? औरों को तो 2 हज़ार, ढाई हज़ार कह देते हो। इन्हों को लाखों वर्ष कैसे दिये हैं? किसी के बुद्धि में नहीं आता है। कहते भी हैं क्राइस्ट से इतना हज़ार वर्ष पहले पैराडाइज़ था। फिर लाखों वर्ष कैसे कहते हो? लाखों वर्ष में तो फिर मच्छरों सदृश्य ढेर के ढेर मनुष्य हो जाये। मिलट्री मिलियन हो जाये।

कुछ भी बुद्धि में नहीं बैठता है। तुम थोड़े भी बात सुनाओ तो वन्डर खावें। परन्तु जो इस कुल के होंगे उनके बुद्धि में आवेगा नहीं तो कहेंगे यह तो पता नहीं क्या बोलते हैं। ब्रह्माकुमारियों को(का) ज्ञान ही वन्डरफुल है। विचित्र ज्ञान है ना। इसमें बड़ी बुद्धि चाहिए। मुख्य तो बात है याद की। स्त्री–पुरुष एक/दो को याद करते हैं ना। यह है आत्माओं की बात। जो आत्मा परमात्मा बाप को याद करती है तो बाप भी उनको याद करते हैं। कशिश होगी। वह हुआ सूक्ष्म। सर्विसएबुल बच्चों को भी याद करता हूँ ना। मनोहर है, कितनी सर्विस करती है। कितना सहन करना पड़ता है। कोई2 पेशेन्ट कितना तंग करते हैं। सभी रोगी पेशेन्ट हैं ना। अभी निरोगी बनना है। अभी तुम समझते हो हम सभी पेशेन्ट थे। यह भी टॉपिक तुम रख सकते हो। आकर समझो, तुम जो घड़ी2 बीमार होते हो हम ऐसे संजीवनी बूटी देंगे जो तुम कब भी बीमार नहीं पड़ेंगे। अगर हमारी दवाई अच्छी रीत काम में लगावेंगे तो। कितनी सस्ती दवाई मिलती है। 21 पीढ़ी सतयुग/त्रेता में तुम कब भी बीमार नहीं पड़ेंगे। वह है ही स्वर्ग। ऐसे2 प्वाइंट नोट कर फिर भाषण लिखना चाहिए तो प्वाइंट इकट्ठी हो जावेगी। तुम तो सर्जनों के सर्जन हो। तो उन्हों को भी लिख कर भेजना चाहिए। सर्जनों का भी बड़ा अविनाशी सर्जन ऐसी दवाई देते हैं जो तुम 21 जन्म कब बीमार नहीं पड़ेंगे। इस जन्म के बाद दूसरे 21 पीढ़ी में कब बीमार नहीं पड़ेंगे। इस जन्म के लिए नहीं कहते हैं। भविष्य 21 जन्म के लिए कहा जाता है। अभी तो है संगम। ऐसी2 बातें सुन कर मनुष्य खुश होंगे। भगवान कहते हैं मैं अविनाशी सर्जन हूँ। याद भी करते हैं ना। पतित–पावन अविनाशी सर्जन आओ। अभी आया हूँ, पिछाड़ी में सब समझेंगे। दिन–प्रतिदिन जो टापिक मिलती रहती है उनको उठाते रहो। बाबा युक्तियां बहुत बतलाते रहते हैं। पूछते हैं सतयुग शिवालय के हो या कलियुगी वैश्यालय के हो? कितनी अच्छी प्वाइंट हैं; परन्तु पत्थर बुद्धि समझते नहीं है। बाप कहते हैं दिन–प्रतिदिन कितनी गुह्य प्वाइंट सुनाते रहते हैं। एक ही टाइम सुना दे तो ज्ञान सागर कैसे कहेंगे? अभी जैसी2 प्वाइंट मिलती जाती है खुशी होती है। परन्तु पत्थर बुद्धि समझते नहीं हैं। सोने को गलाने में बहुत टाइम लगता है। तुम्हारे में भी खाद निकलने में टाइम लगता है। जोर से याद करने से खाद निकलती है। सोना भी बहुत तेज आग से गलता है। बाप भिन्न2 प्रकार से समझाते हैं। बाप को बहुत2 प्यार से याद करना है। लाचारी नहीं। बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं उकनो(उनको) बहुत ही प्यार से याद करना है। खुद मालिक नहीं बनते ; परन्तु मालिकपना तो देते हैं ना। विश्व का मालिक बनाते तो हैं ना। उनको निष्कामी कहा जाता है। मनुष्य क(हते) हैं हम निष्कामी है ; परन्तु निष्कामी कोई हो न सके। निष्कामी सिर्फ एक ही बाप है। बच्चों को कहते बच्चे नमस्ते। तुम विश्व के मालिक बन सकते हो। मैं तो तुम्हारा सेवा कर वानप्रस्थ में चला जाता हूँ। बहुत जन्मों के अन्त के भी जन्म में प्रवेश करता हूँ। 60 वर्ष बाद वानप्रस्थ अवस्था होती है। सतयुग में तो वानप्रस्थी होते नहीं। वह थोड़े ही समझते हैं वानप्रस्थ माना वाणी से परे जाना है। यह सभी प्वाइंट अभी बाप तुम बच्चों को समझाते हैं। जो बाप को जानते हैं वही बाप को मीठे लगते हैं। बाप कहते हैं बहुत याद करेंगे तो तुम्हारे पाप कटेंगे। पतित–पावन मैं हूँ। मुझे पतित–पावन कहते हो तो याद करना पड़े। यह है याद की यात्रा, जिससे तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना होता है। 5000 वर्ष लगे हैं तमोप्रधान बनने में। अभी फिर सतोप्रधान बनना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान सेकण्ड में बन जाते हैं। सतोप्रधान की दशा बृहस्पत की दशा बैठ जाती है। बाप को तो जरूर याद करना चाहिए ना ; परन्तु माया बहुत ऑपोजीशन करती है। बाबा के बने तो याद रहनी चाहिए ना ; परन्तु माया छुड़ाये देती है। याद ही नहीं करते हैं। मैनर्स भी बहुत अच्छी चाहिए। कोई2 के तो मैनर्स बहुत खराब होते हैं। शिवबाबा का फरमान नहीं मानते हैं। बाप इन द्वारा राय देते हैं तो इनकी माननी चाहिए ना ; परन्तु इनके भी नहीं मानते तो निधण के कहेंगे ना। निभागा भी कहा जाता है। ओम।